74

हिंदी साहित्य
विविध विमर्श

संपादक

डॉ. शिखा सिंदवानी

साहित्य संचय

ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन

हम करते हैं समय से संवाद

© संपादक

ISBN : 978-93-88011-39-6

प्रकाशक

साहित्य संचय

बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस

ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस

राम निकुन्ज, पुतलीसडक
काठमांडौ, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2019
कवर डिजाइन : प्रदीप कुमार

मूल्य : ₹ 150/- (भारत, नेपाल)
मूल्य : $ 7/- (अन्य देश)

HINDI SAHITYA VIVIDH VIMARSH
Edited by Dr. Shiksha Sindhvani

साहित्य संचय, बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-110090 से **मनोज कुमार** द्वारा प्रकाशित तथा **श्रीबालाजी ऑफसेट,** दिल्ली द्वारा मुद्रित।

अनुक्रम

	संपादक की कलम से.....	3
1.	भारतीय साहित्य में इस्मत चुग़ताई **डॉ. सचिन कुमार**	7
2.	हिंदी साहित्य में विधवा-विमर्श : एक अध्ययन **डॉ. रणजीत कुमार सिन्हा**	13
3.	भारतीय भाषाएँ एवं उनकी पारस्परिकता **डॉ. सुषमा चौधरी**	19
4.	हिंदी उपन्यासों में समकालीन विमर्शों की झलक **डॉ. प्रीति अग्रवाल**	22
5.	बालकवि बैरागी के काव्य साहित्य में मूल्य-बोध **डॉ. जसविंदर सिंह**	30
6.	बिक्रम सिंह की कहानियों में समकालीन विमर्श **डॉ. विजय**	33
7.	समझदारों की दुनिया में मूर्ख 'माँएँ' : ज्योति चावला की कविताओं के विशेष संदर्भ में **डॉ. नीतू परिहार**	40
8.	सुभद्राकुमारी चौहान के काव्य में विविध आयाम **डॉ. राजेश कुमार**	47
9.	भारत की वित्तीय संस्थाओं में राजभाषा हिंदी का प्रयोग एवं समस्याओं का अध्ययन **डॉ. माजिद मियाँ**	53
10.	कृष्णा सोबती की रचनाओं में आधुनिकता बोध **प्रा. डॉ. पंडित बन्ने**	60
11.	समकालीन कवि प्रतीक मिश्र के काव्य में सामाजिक विमर्श **रामनाथ मिश्र**	65
12.	ऐतिहासिक और साहित्यिक धरातल पर अमीर खुसरो **निर्भय सिंह**	71

समझदारों की दुनिया में मूर्ख 'माँएँ' : ज्योति चावला की कविताओं के विशेष संदर्भ में

डॉ. नीतू परिहार
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
मो.ला.सु.विवि
उदयपुर, राजस्थान
ई.मेल-neetuparihar11@gmail.com

माँ का जीवन में जितना और जैसा महत्त्व है, वह किसी और में नहीं। पूरे संसार में माँ के बराबरी में किसी और को नहीं रख सकते। एक स्त्री के जीवन में माँ के साथ-साथ माँ बनने का सुख भी बिल्कुल निजी है। इस अनुभव को यद्यपि शब्दों में व्यक्त करना बड़ा कठिन है, फिर लिखा जाए तो उसमें बहने से रोकना नामुमकिन है। ज्योति चावला ने 'इन दिनों' शीर्षक से पाँच कविताएँ लिखी हैं जो उनके अनुभवों के अहसास को बयां करती हैं। माँ बनना बेहद निजी अनुभव होता है, जब स्त्री चाहती है अपने भीतर होने वाली हलचल को किसी के साथ बाँटना। उसके पेट के भीतर, नाभि के नीचे उसे लगता है जैसे कोई दस्तक दे रहा है–

"इन दिनों
एक दस्तक-सी हुआ करती है
ऐसे जैसे कोई खटखटा रहा हो दरवाजा
मेरे रक्त और मांस का।"[1]

और ऐसे लगता है जैसे कोई देख रहा है, भीतर से और झाँकने पर छिप जाता है। माँ अपने होने वाले बच्चे की कल्पना करती है और उसकी चंचलता, कोमलता, उसकी मासूमियत पर मुग्ध होने लगती है। माँ जब थककर बिस्तर पर थकान मिटाने लेटती है तो गर्भ के भीतर से महसूस करती है जैसे–